चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.3.26	3	1-5

उपलब्धि

राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन में सरसों पर उत्कृष्ट शोध के लिए मिला सम्मान, डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर भी सम्मानित

एचएयू के डॉ. राम अवतार को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है।

वहीं सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध के लिए गोल्ड मेडल और तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में वीरवार को आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की ओर से दिए गए। पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने प्रदान किए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि पर वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि एचएयू के वैज्ञानिकों का शोध कार्य किसानों और कृषि क्षेत्र के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रहा है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज के साथ वैज्ञानिक। स्रोत : संस्थान

डॉ. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 और आरएच 1975 प्रमुख हैं। इनमें आरएच 725 देश में परिवर्तन लाने वाली किस्म मानी जाती है और यह किस्म देश के 5-6 राज्यों में काफी प्रचलित है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई और सरसों की 25 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केंद्र अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

उन्होंने बताया कि हरियाणा में सरसों की औसत पैदावार वर्ष 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी, जो अब बढ़कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई है। इस अवसर पर उपमहानिदेशक (फसल) डॉ. डी.के. यादव, उपमहानिदेशक (बागवानी) डॉ. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक और भूतपूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	7.3.26	3	1-4

हकृवि के सरसों विज्ञानियों के शोध को मिला लाइफटाइम अवार्ड

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ विज्ञानी एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। सहायक विज्ञानी डा. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डा. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डा. त्रिलोचन महापात्रा ने प्रदान किए। इस अवसर पर डा. डीके यादव, डा. संजय कुमार, डा. संजीव कुमार गुप्ता, डा. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज के साथ हकृवि के सरसों किस्म विकसित करने वाले विज्ञानी • जागरण

हकृवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज ने बताया कि डा. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की है। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 तथा आरएच 1975 प्रमुख हैं। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों विज्ञानियों ने अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. रमेश गोयल व डा एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	7.3.26	5	6-8

हकृवि के सरसों वैज्ञानिक डा. राम अवतार लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

डा. विनोद गोयल व डा. राजबीर मेडल से सम्मानित

हिसार, 6 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डा. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। ये पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रदान किए गए।

इस अवसर पर उपमहानिदेशक (फसल) डा. डी.के. यादव, उपमहानिदेशक (बागवानी), डा. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डा. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक एवं भूतपूर्व निदेशक डा. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि भविष्य में भी आप इसी लग्न से अपना काम करते रहेंगे।

गौरतलब है कि डा. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 तथा आरएच 1975 प्रमुख हैं। कुलपति ने बताया कि आरएच 725 देश में परिवर्तन लाने वाली किस्म है। यह किस्म देश के 5-6 राज्यों में बहुत ही प्रचलित है और अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म में मोटा दाना और अधिक फलियों की विशेषता है। वहीं आरएच 1706 उच्च गुणवत्ता वाले तेल के लिए जानी जाती है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है। आरएच 1975 किस्म कम अवधि में अधिक उत्पादन देने, लंबी फलियों और घनी शाखाओं के कारण किसानों में लोकप्रिय हो रही है। इन किस्मों के विकसित होने से हरियाणा राज्य के सरसों उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हुई है जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ वैज्ञानिक।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि हरियाणा की औसत पैदावार 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जो अब बढ़ कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक जा चुकी है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है तथा वैज्ञानिकों और किसानों ने की दिन-रात मेहनत का परिणाम है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	7.3.26	11	6-8

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों को दी बधाई

वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर भी सम्मानित

■ राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने किए सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अंचीवमेंट अवार्ड से तथा सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। ये पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने प्रदान किए। इस अवसर पर उप महानिदेशक (फसल) डॉ. डीके यादव, उप महानिदेशक (बागवानी), डॉ. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक डॉ. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक एवं पूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे। कुलपति ने कहा कि भविष्य में भी आप इसी लग्न से अपना काम करते रहेंगे।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ वैज्ञानिक। फोटो : हरिभूमि

अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि हरियाणा की औसत पैदावार 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जो अब बढ़ कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक जा चुकी है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है तथा वैज्ञानिकों और किसानों ने की दिन-रात मेहनत का परिणाम है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल व डॉ एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7.3.26	5	5-8

हकृवि के सरसों वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार लाइफटाइम अचीवमैंट अवार्ड तथा डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर गोल्ड मैडल से सम्मानित

हिसार, 6 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। ये पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर उपमहानिदेशक (फसल) डॉ. डी.के. यादव, उपमहानिदेशक (बागवानी), डॉ. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक एवं भूतपूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि भविष्य में भी आप इसी लग्न से अपना काम करते रहेंगे। गौरतलब है कि डॉ. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 तथा आरएच 1975 प्रमुख हैं। कुलपति ने बताया कि आरएच 725 देश में परिवर्तन लाने वाली किस्म है। यह किस्म देश के 5-6 राज्यों में बहुत ही प्रचलित है और अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म में मोटा दाना और अधिक फलियों की विशेषता है। वहीं आरएच 1706 उच्च गुणवत्ता वाले तेल के लिए जानी जाती है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है। आरएच 1975 किस्म कम अवधि में अधिक उत्पादन देने, लंबी फलियों और घनी शाखाओं के कारण किसानों में लोकप्रिय हो रही है। इन किस्मों के विकसित होने से हरियाणा राज्य के सरसों उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हुई है जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि हरियाणा की औसत पैदावार 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जो अब बढ़ कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक जा चुकी है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है तथा वैज्ञानिकों और किसानों ने की दिन-रात मेहनत का परिणाम है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल व डॉ एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	7-3-26	2	6

दैनिक भास्कर

एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड मिला

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ वैज्ञानिक रामअवतार, डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर।

हिसार | हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ। तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। पुरस्कार पूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने प्रदान किए गए। डॉ. रामअवतार 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	06.03.2026	--	--

हकृवि के सरसों वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड तथा डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर मेडल से सम्मानित

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने वैज्ञानिकों को दी बधाई

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। ये पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर उपमहानिदेशक (फसल) डॉ. डी.के. यादव, उपमहानिदेशक (बागवानी), डॉ. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक एवं भूतपूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि भविष्य में भी आप इसी लगन से अपना काम करते रहेंगे। गौरतलब है कि डॉ. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 तथा आरएच 1975 प्रमुख हैं। कुलपति ने बताया कि आरएच 725 देश में परिवर्तन लाने वाली किस्म है। यह किस्म देश के 5-6 राज्यों में बहुत ही प्रचलित है और अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म में मोटा दाना और अधिक फलियों की विशेषता है। वहीं आरएच 1706 उच्च गुणवत्ता वाले तेल के लिए जानी जाती है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है। आरएच 1975 किस्म कम अवधि में अधिक उत्पादन देने, लंबी फलियों और घनी शाखाओं के कारण किसानों में लोकप्रिय हो रही है। इन किस्मों के विकसित होने से हरियाणा राज्य के सरसों उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हुई है जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है।

उन्होंने बताया कि हरियाणा की औसत पैदावार 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जो अब बढ़ कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक जा चुकी है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है तथा वैज्ञानिकों और किसानों ने की दिन-रात मेहनत का परिणाम है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल व डॉ एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दक्ष दर्पण न्यूज	06.03.2026	--	--

हकृवि के सरसों वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड तथा डॉ. विनोद गोयल व डॉ. राजबीर मेडल से सम्मानित

» विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने वैज्ञानिकों को दी बधाई

दक्ष दर्पण

हिसारः चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं तिलहन अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. राम अवतार को सरसों फसल में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा सहायक वैज्ञानिक डॉ. विनोद गोयल को सरसों पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए गोल्ड मेडल तथा तकनीकी सहायक डॉ. राजबीर को सरसों की फ्रंट लाइन डेमोंस्ट्रेशन की उत्कृष्ट मौखिक प्रस्तुति के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये सम्मान उन्हें दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय तिलहन सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदान किए गए। ये पुरस्कार भूतपूर्व महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर उपमहानिदेशक (फसल) डॉ. डी.के. यादव, उपमहानिदेशक (बागवानी), डॉ. संजय कुमार, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव कुमार गुप्ता तथा विभिन्न तिलहन संस्थानों के निदेशक एवं भूतपूर्व निदेशक डॉ. धीरज सिंह भी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि भविष्य में भी आप इसी लग्न से अपना काम करते रहेंगे। गौरतलब है कि डॉ. राम अवतार पिछले 15-16 वर्षों से तिलहन अनुभाग में सरसों फसल पर शोध कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पिछले 6 से 7 वर्षों में सरसों की छह नई किस्में विकसित की हैं। इनमें आरएच 725, आरएच 761, आरएच 1424, आरएच 1706 तथा आरएच 1975 प्रमुख हैं। कुलपति ने बताया कि आरएच 725 देश में परिवर्तन लाने वाली किस्म है। यह किस्म देश के 5-6 राज्यों में बहुत ही प्रचलित है और अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म में मोटा दाना और अधिक फलियों की विशेषता है। वहीं आरएच 1706 उच्च गुणवत्ता वाले तेल के लिए जानी जाती है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है। आरएच 1975 किस्म कम अवधि में अधिक उत्पादन देने, लंबी फलियों और घनी शाखाओं के कारण किसानों में लोकप्रिय हो रही है। इन किस्मों के विकसित होने से हरियाणा राज्य के सरसों उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हुई है जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा अब तक राई व सरसों की 25 किस्में विकसित की गई हैं। पिछले 12 वर्षों में इस टीम को सरसों में उत्कृष्ट कार्य के लिए चार बार उत्कृष्ट केन्द्र अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि हरियाणा की औसत पैदावार 1972-73 में 464 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जो अब बढ़ कर 2201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक जा चुकी है, जोकि एक बड़ी उपलब्धि है तथा वैज्ञानिकों और किसानों ने की दिन-रात मेहनत का परिणाम है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल व डॉ एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे।